Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 08, (जनवरी, 2025)
पृष्ठ संख्या 31–32

रतनजोत की खेती और इसके लाभ

निलेश मौर्या[1] एवं डॉ. लव कुमार[2]

[1]एम ० बी ० ए – कृषि व्यवसाय प्रबंधन,
[2]सहायक प्राध्यापक, सब्जी विज्ञान विभाग
श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: – laukumar77@gmail.com

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में फसलों की विविधीकरण और वैकल्पिक खेती की संभावनाओं पर हमेशा ध्यान दिया जाता रहा है। इस संदर्भ में रतनजोत एक महत्वपूर्ण पौधा है जिसकी खेती बंजर और अनुपजाऊ भूमि पर भी की जा सकती है। रतनजोत न केवल एक आर्थिक रूप लाभकारी फसल है। बल्कि इसका पर्यावरण पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। खास कर बायोडीजल उत्पादन के क्षेत्र में रतनजोत ने एक प्रमुख स्थान हासिल किया है। इसकी खेती उष्णकटिबंधीय और उपोष्ण–कटिबंधीय क्षेत्र में होती है। रतनजोत की खेती किसानो के लिए एक वैकल्पिक आय स्त्रोत बन सकती है ।

रतनजोत का परिचय/उपयोग

रतनजोत एक बहुवर्षीय पौधा है। जो कई सालों तक जीवित रह सकता है इसका उपयोग मुख्य रूप से बायोडीजल के लिए किया जाता है इसके बीजों में 45 से 58% तेल की मात्रा पाई जाती है रतनजोत का तेल बिना महक वाला तथा रंगरहित होता है इसका उपयोग सौंदर्य प्रसाधन साबुन मोमबत्ती ल्यूबरीकैंट दवाइयों व कीटनाशक आदि तैयार करने में प्रयुक्त होता है।

इसकी कोमल शाखाएं दांतों को साफ करने एवं पत्तियों का रस चर्म रोग बुखार है। आदि में, जड़ का दूध सर्पदंश के उपचार में तने का दूध घाव भरने के लिए तथा फूलों का रस स्त्रियों में गर्भ गिराने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। इसमें प्रमुख तत्व जेट्रोफिन होता है। यह कैंसर रोग में प्रतिरोधी क्षमता रखता है। तथा जैविक ईंधन व बायोडीजल बनाने कैंसर दवाइयां दाद खाज खुजली वह गठिया रोग में रतनजोत का उपयोग किया जाता है।

रतनजोत की उन्नत किस्में

रतनजोत को हम बीज वा कटिंग के द्वारा पौधों को तैयार करते हैं । इसकी उन्नति किस्म निम्नलिखित है–

(1) हंसराज (2) एस के नगर विग (3) उर्लिकंचन (4) दद्पति कटिंग के द्वारा पौध तैयार करने के लिए वर्षा ऋतु के आरंभ में स्वस्थ पौधों से लगभग 1–1 फुट लम्बी टहनियों को काटकर उन्हें नर्सरी या पॉलीथीन की थैलियां में लगा देते है। और उसमें नए पते जड़े आने तक उसमें पानी देते है।

रोपाई का सही समय

रतनजोत की रोपाई के लिए मानसून का सही समय जून से जुलाई तक का सबसे उपयुक्त माना जाता है। जून से जुलाई के बीच डाली गई नर्सरी में रतनजोत के पौधे सितंबर से अक्टूबर महीने तक तैयार हो जाते हैं।

रोपाई की विधि

(1). बीज द्वारा रोपाईः–

इनके बीजों की रोपाई से पहले 24 घंटे तक पानी में भिगोकर रखना चाहिए क्योंकि इनके बीज अन्य बीजों की अपेक्षा सख्त होते हैं। इस तरह इनके सभी बीज अच्छी तरह अंकुरित हो जाते हैं। बीजों को 2–3 सेमी. लगभग गहराई में बोया जाना चाहिए। इनके बीजों के बीच की दूरी 2 X 2 मी. रखनी चाहिए ताकि पौधों को फैलने और बढ़ने के लिए पर्याप्त जगह मिल सके।

(2) कलम (कटिंग) द्वारा रोपाई

पौधारोपण से पहले गर्मी के मौसम में 2 2 मीटर की दूरी पर 30 सेमी गोलाई वाले 30 सेमी गहरे गड्ढे तैयार करें तथा 5 किलो गोबर की खाद्य प्रत्येक गड्ढे की मिट्टी में मिला दें। पौधारोपण से ठीक पहले 50 ग्राम यूरिया 60 ग्राम सिंगल सुपर फास्फेट तथा 25 ग्राम म्यूरेट आफ पोटाश प्रत्येक गड्ढे में डालकर मिट्टी में मिला दे। और सितंबर के महीने में पहले से तैयार गढ्ढो में पौध रोपण कर हल्की सी सिंचाई करें। 15 से 20 दिन बाद जिन गढ्ढो के पौधों में नई बढ़वार आरंभ ना हुई हो दोबारा रोपड़ कर दें।

भूमि का चुनाव एवं तैयारी

रतनजोत की खेती के लिए बलुई दोमट मिट्टी और पीएच 5.5 से 6.3 वाली उपयुक्त मानी जाती है। जहां जल निकासी अच्छी हो। भूमि की जुताई में गहरी जुताई खरपतवार की सफाई और जैविक खाद का उपयोग किया जाता है। यह पौधा पथरीली और रेतीली कम उपजाऊ मिट्टियों में भी उग जाता है। अतः किसी भी प्रकार की भूमि जहां पानी अधिक समय तक ना ठहरता हो वह रतनजोत की खेती करने के लिए उपयुक्त मानी जाती है।

रोपाई के एक वर्ष बाद पौधा जमीन से लगभग 9 इंच ऊपर से काट दे इससे अधिक शाखाएं निकलने लगती है। तत्पश्चात रोपाई के तीसरे वर्ष शाखाओं का ऊपरी 2/3 हिस्सा काट दे तथा ⅓ रख ले ताकि नई शाखाएं निकल सकें। क्योंकि नई शाखाओ में ज्यादा फल लगते हैं।

बीज की तोड़ाई

रतनजोत का पौधा 2 वर्ष बाद ही फल देना आरंभ कर देता है 2 वर्ष के पौधों में 1–1.5 किलो. फल प्राप्त होता है। जिसमें से 400–500 ग्राम बीज निकलते है। 5 वर्ष की उम्र के बाद यह पैदावार बढ़कर 5–10 किलोग्राम. फल या 2–5 किलो. ग्राम बीज/प्रति पौधा प्राप्त हो जाता है। रतनजोत के फल अक्टूबर में पकने शुरू हो जाते हैं और दिसंबर तक पकते रहते हैं जिन्हें खराब होने से बचाने के लिए समय–समय पर तोड़ते रहना चाहिए।

उत्पादन

भारत में रतनजोत बीज की औसतन पैदावार 3–5 क्विंटल मिल जाती है । परंतु यदि सही किस्म का चयन करके उन्नति सस्य क्रियाएं अपनाई जाएं तो पैदावार 15–20 क्विंटल/हेक्टेयर तक बढ़ाई जा सकती है।